समाजशास्त्र की प्रकृति (Nature of Sociology)

समाजशास्त्र की प्रकृति के सम्बन्ध में आरम्भ से ही समाजशास्त्रीयों का आग्रह था कि यह एक विज्ञान है और अगस्त कॉम्टे से लेकर 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक के समाजशास्त्रीयों ने इसे विज्ञान सिद्ध करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। समाजशास्त्रीयों ने इस आग्रह के कारण प्रत्यक्षवादी विज्ञान कहा एवं सभी विद्वानों ने समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति की चर्चा की।

समाजशास्त्रीयों ने कहा कि विज्ञान सुनियोजित पद्धति के आधार पर ज्ञान के संकलन को ही कहते हैं और इसलिए विज्ञान का सम्बन्ध पद्धति से है न कि विषय-वस्तु से। सभी समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र के वैज्ञानिक पद्धति की चर्चा की है। अगस्त कॉम्टे ने सर्वप्रथम वैज्ञानिक पद्धति की विस्तृत चर्चा की और कहा कि यह सुनियोजित निरीक्षण, वर्गीकरण, सामान्यीकरण और पूर्व-भास पर आधारित है। दुरखीम (Durkheim) वेबर (Weber) और परेटो (Pareto) जैसे विद्वानों ने पद्धति की अपनी-अपनी चर्चाएँ की हैं। दुरखीम ने कॉम्टे के समान कहा कि इसकी पद्धति ठीक प्राकृतिक विज्ञानों के समान होनी चाहिए। परन्तु वेबर ने समाजशास्त्र और समाज विज्ञान की पद्धति को अलग ही पद्धति कहा है। उनके अनुसार व्याख्यात्मक समझबूझ की यह पद्धति सम्पूर्णतः वैज्ञानिक है, यद्यपि यह प्राकृतिक विज्ञानों से भिन्न है।

उसने स्पष्ट रूप से कहा कि कोई जरूरी नहीं कि इतिहास और भौतिक विज्ञान की पद्धतियाँ एक सी हों।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में समाजशास्त्र की वैज्ञानिक पद्धति में नव प्रत्ययवाद का विकास हुआ एवं इसके अधीन संख्यात्मक विश्लेषण होने लगे। अनुभवजन्य पद्धति, व्यवहारिक आधार एवं संख्यात्मक विश्लेषण इसकी मुख्य विशेषताएँ थीं और इसका अधिक विकास संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। इसके कारण समाजशास्त्र में संख्यात्मक मॉडल्स एवं सांख्यिकी के दूसरे सिद्धान्तों का धड़ल्ले से प्रयोग होना शुरू हुआ। परिणामस्वरूप इसका विरोध भी आरम्भ हो गया एवं वर्तमान स्थिति यह है कि समाजशास्त्र की प्रकृति वैज्ञानिक है एवं इसे एक विज्ञान के रूप में सार्वभौमिक स्वीकृति मिली है। साथ-ही-साथ सांख्यिकी के अत्यधिक प्रयोग को दुराग्रह माना जाता है तथा यह मान लिया गया कि सामाजिक घटनाओं और सामाजिक स्वरूपों में इसके प्रयोग की एक सीमा है। यह भी स्वीकार किया जाता है कि समाजशास्त्र को हम सामाजिक अभियंत्रण में नहीं बदल सकते हैं। इसलिए अनुभवजन्य पद्धति और व्यवहार सम्बन्धी आधार तथा सांख्यिकी का प्रयोग सावधानी और सतर्कता से होना चाहिए।